BEHAVIOURISM
(व्यवहारवाद)

Dr. Ramendra Kumar Singh
HOD
Psychology विभाग
R. K. College Dumraon
(V.K.S.U., Ara)

मनोविज्ञान के प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना 1789 ई० में जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में विलियम वुण्ड द्वारा की गई। मनोविज्ञान के इतिहास में इसे एक प्रस्थान बिन्दु माना जाता है। यहीं से विज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा (Independent Branch of Science) के रूप मनोविज्ञान का जन्म हो जाता है। अपने जन्म अथवा स्थापना काल से अब तक मनोविज्ञान कई पड़ावों को पार करते हुए वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया है। इस दरम्यान मनोविज्ञान में अलग-अलग विचारधाराओं अथवा मान्यताओं को मानने वाले मनोवैज्ञानिकों का अलग-अलग समूह बनता गया। खास समूह अथवा विचारधाराओं को मानने वाले मनोवैज्ञानिक दूसरे समूह के विचारों अथवा मान्यताओं की कमियों को ढूढ़कर विरोध में अपनी विचारधारा को वैज्ञानिक बनाने के लिए प्रयास करते रहे। परिणामत: मनोविज्ञान में नई नई विचारधाराएँ प्रस्फुटित हुई और मनोविज्ञान विज्ञान बनने के करीब पहुँचता गया। इस तरह मनोविज्ञान के अन्तर्गत कई स्कूल अथवा सम्प्रदायों की स्थापना हुई। वस्तुत: इन अलग-अलग मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं अथवा मान्यताओं को माननेवाले मनोवैज्ञानिकों की समूह को ही 'मनोविज्ञान का स्कूल' अथवा 'मनोविज्ञान का सम्प्रदाय' कहा जाता है। समवेत रूप से मनोविज्ञान के इन विभिन्न सम्प्रदायों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मनोविज्ञान को विज्ञान की दर्जा दिलाने में बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान दीं। 'व्यवहारवाद' भी मनोविज्ञान की एक ऐसी ही महत्वपूर्ण सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय का मनोविज्ञान के इतिहास में विशिष्ठ स्थान प्राप्त है। मनोविज्ञान के इतिहास में इसकी प्रबलता एवं महत्ता के चलते ही द्वितीय-बल (SECOND FORCE) माना जाता है।

Scanned by CamScanner

व्यवहारवाद की स्थापना जे०बी० वाट्सन द्वारा (1913) ई० में जॉन हापकिंस विश्वविद्यालय में की गई। स्थापना से पूर्व वाट्सन ने कोलम्बिया में एक व्याख्यान दिया था। इस व्याख्यान को WATSON ने (1913) में "Psychology as the behaviourist Views it" नामक शीर्षक से प्रकाशित कराया। वास्तव में व्याख्यान के इस लेख को व्यवहारवाद की पूर्वपीठिका माना जाता है। इसी की पृष्ठभूमि पर (1913) व्यवहारवाद की स्थापना हुई। वाट्सन द्वारा स्थापित व्यवहारवाद मनोविज्ञान में काफी लोकप्रिय रहा, लगभग तीस वर्षों तक मनोविज्ञान को अपने साथ चलने के लिए विवश कर दिया। WATSON एवं उसके समकालीन व्यवहारवादियों को प्रारंभिक व्यवहारवादी माना जाता है। आगे चलकर व्यवहारवाद को और वैज्ञानिक, प्रयोगात्मक एवं उन्नत बनाने का प्रयास उत्तरकालीन व्यवहारवादियों द्वारा किया गया जिसमें टालमैन. हल, गथरी, स्कीनर. बन्डुरा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनके व्यवहारवाद को उत्तरकालीन व्यवहारवाद कहा जाता है। अपनी कुछ खामियों के बावजूद व्यवहारवाद मनोविज्ञान में एक नये युग के सूत्रपात का द्योतक है। इसने मनोविज्ञान को एक नया आयाम दिया और वैज्ञानिक बनाने मानक तय कर दी। वाट्सन ने व्यवहारवाद की स्थापना टिचनर के संरचनावाद के विरोध में की। वाट्सन की स्पष्ट मान्यता थी कि "मनोविज्ञान प्राकृत विज्ञान (Natural Science) की एक ऐसी शाखा है, जो मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है और इसकी अध्ययन की विधि वस्तुनिष्ठ (objective) तथा प्रयोगात्मक (Experimental) होनी चाहिए। वाट्सन ने व्यवहार को बड़ा ही व्यापक रूप में परिभाषित की है। उनके अनुसार व्यवहार में अर्जित अनुक्रिया एवं अनर्जित अनुक्रिया दोनो हो सकती है, जिसमें स्पष्ट व्यवहार (overt behaviour) जैसे- टहलना

Scanned by CamScanner

खेलना, मुस्कुराना, रोना, साँस लेना, रक्तचाप, धड़कन आदि के साथ-साथ अस्पष्ट व्यवहार (covert behaviour) जैसे चिंतन, प्रत्यक्षण आदि भी आते हैं।" गहन अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि वाट्सन अरस्तु (मनोविज्ञान के जनक) थार्नडाइक के पशु मनोविज्ञान और विकासवाद के जनक डार्विन के विकासवाद Concept expression of Emotions in Man & Anima (1977) आदि से किसी न किसी रूप में अवश्य ही प्रभावित थे। मनोविज्ञान के इतिहास में WATSON के व्यवहारवाद का काफी बोल-बाला रहा। इसने लगभग तीस वर्षों तक मनोविज्ञान को अपने साथ चलने के लिए भूमि तैयार कर दी। यहाँ से मनोविज्ञान में एक नये युग का सूत्रपात होता है। लगभग तीस वर्षों तक मनोविज्ञान में इसका एकाधिकार बना रहा। इस तरह मनोविज्ञान में नये नये सम्प्रदायों के अभ्युदय की पृष्ठभूमि व्यवहारवाद ने तैयार कर दी। अपनी लोकप्रियता और प्रबलता के चलते व्यवहारवाद को मनोविज्ञान में द्वितीय बल (SECOND FORCE) कहा जाता है।

अब तक की व्याख्या और विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है, कि व्यवहारवाद का जन्म संरचनावाद और कुछ मायने में प्रकार्यवाद के विरोध में हुआ, जो मूलतः चार मान्यताओं पर आधारित है:-

1. मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक शाखा है।

2. अन्तर्निरीक्षण मनोविज्ञान के अध्ययन की विधि नहीं हो सकती है।

3. वैज्ञानिक महत्व के आंकड़े चेतना के अध्ययन से नहीं प्राप्त हो सकते।

4. मनोविज्ञान की विषय-वस्तु व्यवहार का अध्ययन करना है। इसमें सरल एवं जटिल दोनों ही प्रकार के व्यवहार हो सकते हैं।

इस प्रकार संक्षेप एवं सरल भाषा में अगर कहा जाए तो वाट्सन के व्यवहारवाद के अनुसार-

"मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक शाखा है, जो व्यवहार का अध्ययन करता है तथा इसके अध्ययन की विधि प्रेक्षण अथवा

Scanned by CamScanner

निरीक्षण है। इसमें अनुबंध्य परीक्षण तथा मौखिक प्रतिवेदन आदि भी सम्मिलित हो सकते हैं।"

व्यवहारवाद के प्रमुख सम्प्रत्यय

व्यवहारवाद के स्थापना का श्रेय जे० बी० वाट्सन को जाता है। वाट्सन और उनके समकालीन सहयोगियों को प्रारंभिक व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक माना जाता है, तथा उनके द्वारा स्थापित व्यवहारवाद को प्रारंभिक व्यवहारवाद (Early Behaviourism) कहा जाता है। इसके तहत स्मृति, संवेग, चिंतन, सीखना आदि अन्य मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्ययों के अध्ययन पर अधिक बल दिया गया था।

विकास के इसी कड़ी में आगे चलकर मनोवैज्ञानिकों का एक ऐसा समूह बना जो वाट्सन एवं उनके सहयोगियों (अनुयायियों) द्वारा स्थापित व्यवहारवाद के मूल ढांचे को बरकरार रखते हुए व्यवहारवाद को और अधिक उन्नत बनाने की कोशिश किए। इन लोगों ने मनोवैज्ञानिक प्रविधियों को अपने प्रयोगों के माध्यम से परिमार्जित और परिवर्धित करके विकसित की। इन लोगों द्वारा मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक पद्धति और नियंत्रण पद्धति को (Experimental System & Controlled) मजबूत बनाने का प्रयास किया। यह एक सराहनीय प्रयास थी। इसके फलस्वरूप मनोविज्ञान विज्ञान के समक्ष खड़ा हो गया। मनोविज्ञान में इन मनोवैज्ञानिकों को उत्तरकालीन व्यवहारवादी और इनके सम्प्रत्यय को LATER BEHAVIOURISM कहा जाता है। गथरी, हल, स्कीनर, टालमैन, कन्टोनर, बण्डूरा आदि की गणना उत्तरकालीन व्यवहारवादी के रूप में की जाती है। गथरी की समीपता सिद्धान्त, हल की Hypothetical deductive Method, स्कीनर की क्रियाप्रसूत सिद्धान्त, टालमैन का सोद्देश्य - व्यवहारवाद (Purposive behaviourism), जे० आर० कंटोनर की - अन्तःव्यवहारवाद (Interbehaviourism), बण्डूरा की पर्यावरणीय महत्व वाली observational learning आदि काफी प्रचलित हैं। इन लोगों ने अपने सिद्धान्तों एवं प्रयोगों द्वारा

Scanned by CamScanner

मनोविज्ञान एवं व्यवहारवाद दोनों को उन्नत बनाया तथा वैज्ञानिक आयाम दिया।

व्यवहारवाद के मूल तत्व एवं विशेषताएँ :-

वाट्सन ने अपने व्यवहारवाद में चेतना को महत्व नहीं दिया और पशुमनोविज्ञान को मानव मनोविज्ञान पर भी लागू करते हैं। क्योंकि उनके अनुसार मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है, न कि चेतना की। उन्होंने मन और चेतना को नकार दिया। इसीलिए उनके मनोविज्ञान को Mindless psychology (मन रहित मनोविज्ञान) कहा जाता है। शायद यही कारण है कि वाट्सन के व्यवहारवाद को अनुभाविक व्यवहारवाद (Emperical Psy) अथवा कार्य विधि व्यवहारवाद (Methodological Behaviourism) भी कहा जाता है।

विशेषताएँ :-

1. व्यवहारवाद उद्दीपन-अनुक्रिया को महत्व देता है। उनके अनुसार मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है जो प्राणी के प्रेक्षणीय और अप्रेक्षणीय दोनों तरह के व्यवहारों का अध्ययन करता है। उन्होंने व्यवहार को व्यापक अर्थों में परिभाषित किया है। शाब्दिक अभिव्यक्ति (verbalization) भी एक तरह का व्यवहार है।

2. वाट्सन के अनुसार मनोविज्ञान एक वस्तुनिष्ठ विज्ञान है। इसलिए इसकी विधि अन्तर्निरीक्षण कैसे हो सकती है? इसकी विधि Emperical होनी चाहिए। अतः मनोविज्ञान की विधि objective observation होनी चाहिए। प्रयोगशाला के बाहर भी व्यवहारों का अध्ययन बिना उपकरणों के सहायता से प्रेक्षण द्वारा संभव हो सकता है। इस तरह वैज्ञानिक अध्ययन बिना उपकरण की सहायता से प्रेक्षण द्वारा संभव हो सकता है।

दूसरी तरफ experimental method के महत्व को भी स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार प्रयोगों द्वारा वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है। इस तरह watson का व्यवहारवादी objective observation एवं experimental method दोनों के महत्व को स्वीकारते हैं।

Scanned by CamScanner

③ इसके अलावे वाट्सन अनुबंधित-परिवर्त-विधि (Conditioned-reflex Method) को भी महत्व देते हैं। पावलव बेख्तरेव से प्रभावित होकर वाट्सन ने यह माना कि व्यवहार के वैज्ञानिक विश्लेषण अनुबंधन के लिए अनुबंधन का उपयोग किया जाना चाहिए।

④ वाट्सन verbal report Method को भी महत्व देते हैं। जिसके लिए इनकी आलोचना भी होती है।

⑤ वाट्सन आदि व्यवहारवादी बच्चों में भाषा विकास को भी conditioning के आधार पर सीखा गया व्यवहार मानते हैं। भाषा विकास तुतलाना का ही विकास है।

⑥ इनके अनुसार चिंतन भी एक covert behaviour है। छोटे बच्चे जोर-जोर से बक-बक करते हैं जिसके कारण बड़े बुजुर्ग ऐसा करने पर उन्हें डाँटते हैं; जो आगे चलकर silent speech में बदल जाती है। इसमें सूक्ष्म रूप से मांसपेशियों में गतियाँ होती रहती हैं। वाट्सन का मानना है कि चिंतन में होंठ, जीभ, स्वरयंत्र अन्दर-ही अन्दर गतिशील होती हैं जिससे Sub-vocal thinking की उत्पत्ति होती है। इसलिए वाट्सन के चिंतन सिद्धान्त को परीधीय सिद्धान्त कहा जाता है।

⑦ ~~व्यवहारवाद के अनुसार~~ वाट्सन का व्यवहारवाद पर्यावरण के महत्व को अधिकतर जोर देता है। इनके अनुसार एक सामान्य मानव - बालक में कुछ अन्तःशक्तियाँ होती हैं जिसे पर्यावरण इस तरह प्रभावित करता है कि वह बड़ा होकर सज्जन या दुर्जन बन जाता है। व्यक्तित्व के विकास में वातावरण अहम भूमिका निभाती है जिसकी विशद व्याख्या अपने प्रसिद्ध पुस्तक BEHAVIOURISM में की है जो (1925) ई० में प्रकाशित हुई थी। ये मूल प्रवृत्ति को नहीं मानते हैं। वाट्सन के अनुसार बालकों में अन्तःशक्ति निहित होती है; जो वातावरण के प्रभाव से विशेष रूप में ढल जाती है। किसी भी व्यक्ति को उन्नत वातावरण में रखकर उसे परिष्कृत किया जा सकता है। वाट्सन के अनुसार पुनर्शिक्षण, पुनर्वास आदि के द्वारा अवांछित व्यवहार को परिमार्जित किया जा सकता है।

⑧ वाट्सन के ~~विकासवाद~~ व्यवहारवाद के अनुसार मानव

Scanned by CamScanner

का व्यवहार बाह्य कारकों से निर्धारित होती है। व्यक्ति को वातावरण में घटित कारक अधिक प्रभावित करते हैं। उसकी अपनी इच्छा का महत्व ऐसा कम होता है। व्यवहारवाद के इस अवधारणा का काफी महत्व है। खासकर Criminology (अपराधशास्त्र) के अध्ययन में इससे काफी मदद मिलती है। आधुनिक Criminologist इसे काफी महत्वपूर्ण मानते हैं। पुनर्अनुबंधन (Reconditioning) एवं पुनर्शिक्षण (Relearning) द्वारा अपराधियों को सुधारा जा सकता है। अपराधी व्यवहार को नियंत्रित की जा सकती है।

(9) वाट्सन का मानना है कि सभी प्रकार की आदतें सीखी जाती हैं। कई प्रयोग करके इसे साबित करने का प्रयास किया है। अपनी पत्नी RAYNER के साथ वाट्सन ने अल्बर्ट (ALBERT) नामक बच्चे पर बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रयोग किया। इसके द्वारा उन्होंने साबित कर दिया कि डर अनुक्रिया (Phobiya) एवं अन्य गलत आदतों को भी सुधारा जा सकता है। यह प्रयोग वाट्सन ने (1920) ई० में किया और अनुबंधन के महत्व को स्थापित किया। सभी आदतें Law of frequency & Law of recency पर आधारित होती हैं।

(10) व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने व्यवहारिक बातों पर अधिक जोर दिया है। उनके अनुसार बालक अपने शिक्षकों, माता पिता को Role Model मानते हैं। अतः पहले माता पिता और शिक्षकों के व्यवहारों में सुधार की की शिक्षा होनी चाहिए। माँ-बाप, शिक्षक, बड़े का व्यवहार सही रहेगा तो उसका अनुकरण करके बच्चे भी सही एवं उचित व्यवहार अपनायेंगे।

(11) उत्तरकालीन व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने खासकर स्कीनर, टालमैन, हल ने अपने प्रयोगों के माध्यम से व्यवहारवाद का विस्तार किया और शिक्षा एवं शिक्षण में अनेक सिद्धांत दिए। कई नये नियमों का प्रतिपादन किया, जिसका आज भी महत्व है।

आलोचना

व्यवहारवादी मनोविज्ञान की नींव वाट्सन ने रखी जिसपर आगे चलकर कई समकालीन एवं उत्तरकालीन व्यवहारवादियों ने अध्ययन किया और

Scanned by CamScanner

इसे विस्तार देने की कोशिश की। इसे और अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए प्रयोगात्मक अध्ययन की, तथापि इसमें कुछ कमियाँ थी। इसके कुछ कमजोर पक्ष भी थे। वाट्सन ने पर्यावरणीय कारकों को जरूरत से ज्यादा महत्व दिया है; जो सही नहीं है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि चेतना एवं मन के अस्तित्व को नकार कर संवेगात्मा चिंतन की सफल व्याख्या कैसे की जा सकती है? इस बिंदु पर वाट्सन उपहास के पात्र बन जाते हैं। कुछ लोग इस आधार पर भी इसकी आलोचना करते हैं कि एक तरफ व्यवहारवाद में Introspection को नहीं माना जाता है फिर Verbal report क्या है? यह तो अन्तर्निरीक्षण का बदला गया नाम मात्र है।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मनोविज्ञान में व्यवहारवाद का अभ्युदय एक नये युग का सूत्रपात है। यद्यपि बाद के व्यवहारवादियों ने इसे प्रयोगात्मक आधार देकर वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसने का प्रयास किया। इसने मनोविज्ञान में लगभग तीस वर्षों तक अपना परचम लहराया और मनोविज्ञान को एक नई दिशा दी। तथापि कई सम्प्रदायों को लेकर इसकी आलोचनाएँ भी गई जो वाजिब भी है। इसके बावजूद मनोविज्ञान में व्यवहारवाद का काफी देन है। वाट्सन ने व्यवहारवाद के माध्यम से मनोविज्ञान की एक ऐसी नींव डाली जिस पर आगे चलकर मनोवैज्ञानिकों को प्रयोग और शोध करना आसान होता गया। इससे कालान्तर में मनोविज्ञान में कई नये सम्प्रदायों की उत्पत्ति होती गई और मनोविज्ञान विज्ञान के करीब पहुँचता गया। आज भले ही व्यवहारवाद का अस्तित्व विलुप्त हो चुका है फिर भी इसका महत्व हमेशा बना रहेगा।

=